230(क) लेख– आंदोलन अन्ना हजारे, एक समीक्षा
230 (ख) लेख संसद की अवमानना का उपयोग या दुरूपयोग
230 (ग) प्रश्न सुशासन की मौलिक समस्या का समाधान – भरत झुनझुन वाला
230 (घ) आचार्य पंकज, अध्यक्ष व्यवस्था परिवर्तन मंच, रिषिकेष उत्तराखंड
230 (च)प्रश्न– श्री जगदीश गांधी , सिटी मोन्टेसरी स्कूल लखनउ उत्तर प्रदेश
230 (छ) प्रश्न– श्री बाल कृष्ण पिल्लै , तिरूअन्नतपुरम , केरल
230 (ज)प्रश्न– श्री चिन्मय व्यास , मालदेवता , देहरादून उत्तरांचल
230 (झ)उत्तरार्ध

आंदोलन अन्ना हजारे, एक समीक्षा

हम आप जिस आंदोलन को अन्ना का आंदोलन कहते रहे हैं वह अन्ना का आंदोलन न होकर लोक और तंत्र के बीच अधिकारों के पुनर्विभाजन का आंदोलन है। प्रारंभ में यह आंदोलन भ्रष्टाचार निवारण का एक छदम मुखौटा लेकर मैदान में आया किन्तु प्रथम चरण पूरा हाते ही इसका वह मुखौटा उतर गया और अब अन्ना का आंदोलन अपने वास्तविक स्वरूप की दिशा में बढ़ने लगा है।

भागीरथ ने गंगा अवतरण के लिये तप किया। गंगा का अवतरण शंकर की जटाओं तक हुआ और वहॉ से गंगा साकार होकर पृथ्वी तक आई। इस लोकतंत्र के लिय गांधी के नेतृत्व में भारत की जनता ने लम्बा संघर्ष किया। सन् सैंतालीस में लोकतंत्र रूपी गंगा विदेशी गुलामी से मुक्त हुई तथा भारतीय संविधान तक आई। किन्तु हमारे लोकतांत्रिक शंकर की नीयत खराब हो गई। उन्होंने संविधान को अपने स्तर तक समेट कर रोक लिया। संसद ने लोक तंत्र की परिभाषा ही बदल दी। उसे कभी लोक नियंत्रित तंत्र बनने ही नहीं दिया। वह तो लोक नियुक्त पर आकर रूक गई। हमारी वर्तमान संसदीय प्रणाली ने संवैधानिक प्रणाली का दो तरफा दुरूपयोग
किया। उसने अपने एक हाथ में तो संविधान को इस प्रकार रखा कि वह उसके लिये ढाल की तरह बचाव करता रहे तो दूसरी तरफ वह दूसरे हाथ की मुठी में इस प्रकार बंद रहे कि वह संसद की मर्जी के बिना हिल डुल भी न सके। अब भागीरथ रूपी अन्ना ने शंकर रूपी संसद के हाथों संविधान रूपी गंगा को मुक्त कराने का अभियान प्रारंभ किया है।

इसके पूर्व भी इस अभियान के नाम पर कई प्रयास हुए। पहला प्रयास जय प्रकाश जी का हुआ जो लगभग असफल रहा। जय प्रकाश जी के आंदोलन की अपेक्षा अन्ना का आंदोलन कई गुना बडा था, स्पष्ट था और सफलता की ओर बढ़ा। अब तक मैं जे. पी. आंदोलन को ही सर्वोच्च प्रयत्न मानता था किन्तु अन्ना के आंदोलन के समक्ष जे. पी. आंदोलन बिल्कुल ही बौना दिखने लगा है। बहुत अन्तर है दोनो के बीच। जे. पी. का आंदोलन प्रारंभ हुआ व्यवस्था परिवर्तन जैसे बड़े लक्ष्य से किन्तु पहुॅच गया सत्ता परिवर्तन तक। जे.पी. आंदोलन सत्ता से बाहर के नेताओं को जोड़कर बनाया गया एक आंदोलन था जिसके मुखिया जय प्रकाश थे। किन्तु अन्ना का आंदोलन शुरू हुआ भ्रष्टाचार नियंत्रण जैसे छोटे लक्ष्य से तथा बढ़ रहा है व्यवस्था परिवर्तन की ओर। इस आंदोलन से कोई संगठन संबद्ध नहीं जिससे सलाह लेना अन्ना की मजबूरी हो। जे.पी. आंदोलन में अनेक संगठन सहभागी थे। अन्ना आंदोलन में अन्ना के अतिरिक्त अन्य कोई व्यक्ति या संगठन सहभागी नहीं। कुछ लोग आंदोलन के समर्थन तक सीमित हैं तो कुछ सहयोग तक।

दूसरा अन्तर यह है कि जय प्रकाश आंदोलन के समय भारत की राजनैतिक व्यवस्था एक तानाशाह प्रवृत्ति के मजबूत प्रधानमंत्री के हाथ में थी। अन्ना आंदोलन के समय राजनैतिक व्यवस्था एक अपेक्षा कृत लोक तांत्रिक तथा कमजोर प्रधानमंत्री के हाथ में है। यदि इस समय भारत के प्रधान मंत्री मनमोहनसिंह की जगह नरेन्द्र मोदी अथवा चिदम्बर सरीखा कोई होता तो इतनी आसानी नहीं होती।

जे.पी. के बाद हल्का प्रयास विश्वप्रताप सिंह का माना जाता है किन्तु विश्वनाथ प्रताप सिंह इमानदार और चरित्रवान होते हुए भी सस्ता मोह में इस सीमा तक डूबे हुए थे कि उनके प्रयत्न की इस आंदोलन से तुलना करना ही व्यर्थ है। रामदेव जो के प्रयत्न को तो किसी आंदोलन की सीमा में शामिल करना भी व्यर्थ है। उसका अस्पष्ट लक्ष्य था, अनुभव हीन नेतृत्व था, तथा योजना का अभाव था। उसके बाद यह आंदोलन अन्ना शुरू हुआ। इस आंदोलन को आजादी की दूसरी लड़ाई भी कहा जाय तो कोई अतिशयोक्ति नहीं होगी।

इस लड़ाई में सबसे ज्यादा अस्पष्ट भूमिका रही भारतीय जनता पार्टी की। पूरे आंदोलन काल में ऐसा कभी नहीं हुआ जब वह आंदोलन के पक्ष अथवा विपक्ष में स्पष्ट दिखी हो। ऐसा भी नहीं कि वह निष्पक्ष होकर इस खेल से बाहर हो। भारतीय जनता पार्टी लगातार इस प्रयत्न में रही कि इस पूरे सघर्ष में उसका कोई राजनैतिक लाभ हो। चाहे अन्ना सफल हों या असफल इससे उसका कभी कोई मतलब नहीं रहा। जब भी अन्ना का पक्ष कमजोर होता था तो तत्काल वह सरकार के विरूद्ध बोलने लगती थी और अन्ना का पक्ष मजबूत होते ही वह सरकार के पक्ष में खड़ी हो जाती थी। गिरगिट की तरह इतनी जल्दी भाजपा या उसके प्रवक्ता रंग बदल लेते थे कि उसके विषय में कोई स्पष्ट टिप्पणी ही करना संभव नहीं। सर्व दलीय बैठक के पूर्व कांग्रेस पूरी तरह समर्पण के पक्ष में थी। तत्काल भाजपा ने कांग्रेस को हिम्मत दी। कांग्रेस का अन्ना के प्रति व्यवहार कड़ा हुआ तो भाजपा ने फिर से अन्ना के सुर में सुर मिला लिया। यहॉ तक कि सताइस तारीख की दोपहर तक कांग्रेस प्रस्ताव पारित करने के पक्ष में थी तो भाजपा ने धीरे से कांग्रेस को मतदान न कराने की बात कह दी। जब कांग्रेस ने प्रस्ताव टाल दिया तो भाजपा ने खुलकर अन्ना के पक्ष में घोषणा करनी शुरू कर दी।

जेडीयू का नीतिश कुमार गुट शुरू से ही अन्ना आंदोलन के पक्ष में था और शरद यादव गुट बिल्कुल खिलाफ। नीतिश कुमार खुलकर बोलते नहीं थे किन्तु चुपचाप समर्थक थे। शरद यादव ने संसद में जा भाषण दिया वह बहुत जहरीला था। उन्होंने सांसदों

को संसद सर्वोच्च के नाम पर भड़काने की भरपूर कोशिश की तो साथ ही आदिवासी हरिजन महिला के नाम पर भी पेच लगाने में कोई कसर नहीं छोड़ी।

कांग्रेस पार्टी का हर सांसद अन्ना आंदोलन के खिलाफ था किन्तु दलीय रणनीति अलग–अलग थी। कपिल सिब्बल, गृहमंत्री चिदम्बरम् आंदोलन को प्रशासनिक तरीके से दबाना चाहते थे तो सोनिया राहुल गुट कूटनीतिक स्तर पर। मनमोहन सिंह जी भी अन्ना आंदोलन के पक्ष में नहीं थे किन्तु वे दोनों ही गुटों के बीच में थे। प्रारंभ में सिब्बल चिदम्बरम् गुट को पूरी छूट दी गई। प्रधानमंत्री के भाषण के हर शब्द अन्ना के प्रति कठोर थे। जब पासा उल्टा पड़ते दिखा तो कमान राहुल गुट ने सम्हाल ली। राहुल गुट भी अपने कूटनीतिक प्रयासों के परिणामों की सफलता के प्रति आश्वस्त था। राहुल टीम के तरकश मे राष्ट्रीय सलाहकार समिति रूपी एक ऐसा तीर था जो अन्ना आंदोलन को समझाने के लिये भी पर्याप्त ताकतवर था और न मानने पर घातक आक्रमण के लिये भी पर्याप्त था। राष्ट्रीय सलाहकार समिति ने अन्ना आंदोलन को भटकाने की जी तोड़ कोशिश की और सफलता न मिलने पर अरूणा तय का प्रस्ताव रूपी ब्रम्हास्त्र का भी उपयोग कर दिया। पूरा आंदोलन सकते में आ गया किन्तु थोड़े ही समय में उसके प्रभाव को कम कर दिया गया। कांग्रेस पार्टी ने अपने पास अग्निवेश नामक एक ऐसा भी कूटनीतिक शस्त्र सुरक्षित रखा हुआ था जिसके आक्रमण से तो आज तक कोई बच ही नहीं सका। यह एक ऐसा शस्त्र है जो प्रारंभ से ही शरीर के साथ चिपका रहता है और आक्रमण करके भी मल्हम पट्टी के काम आता रहता है। यह समय समय पर चिदम्बरम् गुट की भी सहायता करता रहता है तथा राहुल गुट के लिये भी। जब सारे शस्त्र नाकाम हो गये तब अग्निवेश का उपयोग किया गया किन्तु या तो अन्ना गुट से अग्निवेश धोखा खा गये अथवा उनके किसी अन्य साथी ने उन्हें धोखा देकर उनकी कपिल जी से हुई फोन की बात रेकार्ड कर ली। तत्काल ही अन्ना गुट ने उन्हें किनारे कर दिया। परिणाम हुआ कि अग्निवेश का आक्रमण भी विफल हुआ। साथ ही सारी दुनिया को भी पता चल गया कि यह व्यक्ति कितना खतरनाक है। अन्त अन्त में राहुल जी स्वयं मैदान में आये और उन्होंने लोकपाल को संवैधानिक दर्जा देने का एक नया दांव फेंका किन्तु तब तक वातावरण इतना बिगड़ चुका था कि उनका वह दांव भी कोलाहल में ही दब गया।

अन्ना के आंदोलन से वे सारे तत्व परेशान दिखे जो धर्म,जाति, गरीब अमीर के नाम पर समाज को तोडकर लम्बे समय से अपनी दुकानदारी चला रहे है । समाज को वर्गो मे बांटकर ऐसे वर्गो का नेतृत्व ले लेना और उसके नाम पर अपनी व्यक्तिगत दुकानदारी खडी करने मे ये तत्व लम्बे समय से सफल रहे है। आंदोलन अन्ना ने एकाएक धर्म जाति गरीब अमीर की सारी दीवारें तोड कर रख दी । प्रत्येक व्यक्ति एक सामाजिक व्यक्ति के रूप मे आंदोलन से जुडा और जुडता ही चला गया । संघ परिवार ने पहले तो एक संगठन के रूप मे आंदोलन के सहभागी बनने की कोशिश की जिसे आंदोलन अन्ना ने अस्वीकार कर दिया। जब संघ परिवार को लगा कि उसके कार्यकर्ता अनुशासन तोडकर भी आंदोलन मे चले जायगें तो संघ परिवार ने समर्थन व्यक्त करना ही ठीक समझा ।रविशंकर जी महाराज क्या चाहते है यह समझना न पहले कभी आसान था न अब है । उन्होने अन्ना को क्या समझाया यह पता ही नही चल पाया । कुछ हरिजन नेता तो हरिजनों को जुडते देख बहुत ही बौखला गये । उदित राज जी ने तो बाकायदा अन्ना विरोध का एलान भी कर दिया था। अन्य कुछ स्वतंत्र हरिजन नेता भी इतने दिन परेशान ही रहे। मायावती जी ने बिल्कुल स्पष्ट शब्दो मे आंदोलन अन्ना का विरोध किया और सलाह दी कि वे चुनाव मे आवे । इसी तरह कुछ मुस्लिम धर्म गुरूओ ने तो आंदोलन अन्ना का समर्थन करना उचित समझा तो कुछ ने समझा कि जब दीवार टूटनी ही है तो अन्तिम दम तक कोशिश करनी चाहिये । अब्दुला बुखारी ने मुसलमानों को रोकने की पूरी पूरी कोशिश की यद्यपि उनके रोकने से कोई रूका नहीं । कुछ नेताओ को इस आंदोलन अन्ना के तेरह दिनो मे इतनी बार संविधान को अंबेडकर के साथ जोडना पडा कि कहीं यह अंबेडकर का संविधान अपना स्वरूप बदलकर भारतीय न बन जावे । उन्हे डर सताने लगा कि यदि यह संविधान भारतीय संविधान बन गया तो उनकी तो सारी दुकानदारी ही खतम हो जायगी। महिलाओं के नाम पर भी तोड फोड करने के प्रयास जारी थे और यदि आंदोलन अन्ना एक दो दिन और चलता तो कोई न कोई महिला नेता मैदान मे कूदती ही।

इस आंदोलन मे एक गुट ने स्पष्ट स्टैड लिया । माया, मुलायम, रामबिलास पासवान लालू प्रसाद यादव आदि के जिस गुट को हम एक समान कार्य प्रणाली का मानते है उन सबने बिना किसी प्रकार का नाटक किये इस आंदोलन का खुला विरोध किया। उनकी नजर मे यह आंदोलन भ्रष्टाचार के भी खिलाफ है और तंत्र सशक्तिकरण के भी खिलाफ। इस गुटके हर सदस्य ने पूरे तर्क देकर सांसदो को यह समझाने की कोशिश की कि यह आंदोलन संसदीय लोकतंत्र को कमजोर करेगा जिसका अंतिम परिणाम होगा तंत्र के अधिकारो मे कटौती और लोक सशक्तिकरण । ये सांसद छाती पीट पीट कर संसद मे चिल्ला रहे थे कि जिस डगाल पर हम सब बैठे है उस डगाल को काटो मत। संसद का दूसरा गुट यह महसूस कर रहा था कि हम जिस पेड पर बैठे है वह इस आंधी मे जड से ही उखड सकता है और वह नुकसान ज्यादा गंभीर होगा। अतः कुछ डगाले कट जाने दो। पेड उखडेगा तो नही । उनकी सलाह थी कि झुक जाओ। समझौता कर लो । तूफान आया है और निकल जायगा । कटे छटे संसदीय लोकतंत्र को बचा लेना ही बुद्धिमानी है।

भारतीय संसद का हर सांसद यह पूरी तरह जानता था कि यह आंदोलन भ्रष्टाचार के विरूद्ध न होकर लोक और तंत्र के बीच शक्ति परीक्षण है यदि हम जरा भी दबे तो लोक हम पर हावी हो जायगा । यह उनके जीवन मरण का प्रश्न है। दूसरी ओर लोक ने भी अपनी सारी शक्ति झोक दी थी। साठ वर्षो से लगातार गुलाम बनाकर रखा गया लोक स्व स्फूर्त ही सडको पर उतर आया था। अधिकांश लोग तो यह जानते ही नही थे कि यह लडाई भ्रष्टाचार की है या लोक स्वराज्य की अथवा कोई और । ये बेचारे तो तंत्र के द्वारा इतने वर्षो से इतनी गुलामी झेल चुके थे कि इन्हे लगा कि अब इससे ज्यादा बुरा और क्या होगा ? वोट देने के अलावा हमारे पास जो भी अधिकार है वे सब तो तंत्र की दया पर ही है । यदि इस आंदोलन से कुछ बिगडा भी तो क्या बिगडेगा। अतः निकल पडे लोग अन्ना की जय जय कार करने। टीम अन्ना ने बडी सूझ बूझ से आंदोलन की रूप रेखा बनाई थी। जब जब मेरी इस योजना पर चर्चा होती थी तो मै सीधे लोक और तंत्र के बीच ध्रुवीकरण का पक्षधर था जबकि टीम अन्ना के लोग इतने आश्वस्त नही थे कि आम लोग लोक स्वराज्य के मुद्दे को समझ लेंगे। अतःवे लोग किसी अन्य मुद्दे से परीक्षण करना चाहते थे । मै इस पक्ष मे नही था कि संसद सर्वोच्च है यह अपने मुंह से बार बार कहा जाय। मै तो संविधान को भी तब तक सर्वोच्च कहने के पक्ष मे नही था जब तक वह संसद की मुठ्ठी मे कैद है । टीम अन्ना मुझसे सहमत नही थी। यही कारण था कि टीम अन्ना के आंदोलन मे हम सबका समर्थन और सहयोग तो था किन्तु सहभागिता नही थी। हमे डर था कि यदि सरकार ने कही झुक कर समझौता कर लिया तो हमारे लोक की लडाई का क्या होगा जो सरकार से सुख सुविधाओं के लिये परेशान नही है बल्कि सरकार की गुलामी से परेशान है। यह संसद, यह संविधान, यह न्यायपालिका, सब के सब तंत्र के साथ है। ये हमें सुख सुविधाये तो देने के लिये तैयार हो सकते है किन्तु स्वतंत्रता नही दे सकते।एन ए सी में बैठे तंत्र के एजेंट दिन रात इमानदारी से हमारी सुख सुविधाओ की चिन्ता करते तो रहते हैं। लेकिन क्या कभी इन्होने हमारी गुलामी के बारे मे भी सोचा । अन्ना जी ने सोचा तो उन एजेंटो ने प्रस्ताव अरूणा राय

बनाकर उसमे भी अड़ंगा लगाने की कोशिश की । मेरा यह मत था कि भ्रष्टाचार की लडाई जीत भी ले तो हमारी सुख सुविधाए बढ सकती हैं किन्तु हमारी स्वतंत्रता मे कोई वृद्धि नही होगी । टीम अन्ना ने जो मार्ग चुना और जो परिणाम आया उससे हम दोनो की ही धारणाए पुष्ट होती है । टीम अन्ना के इस कथन मे भी दम है कि भ्रष्टाचार के विरूद्ध ही आंदोलन ने राजनेताओं की बोलती बन्द की अन्यथा वे शुरू से ही एक जुट हो जाते और जनता के बीच भ्रम फैलाते । हमारा मत यह है कि यह लडाई कभी भ्रष्टाचार के विरूद्ध शुरू ही नही हुई । यदि होती तो समाज मे गले तक भ्रष्टाचार मे डूबे लोग इस आंदोलन मे शामिल नही होते । यह लडाई शुरू से ही गुलामी और स्वतंत्रता के बीच की लडाई समझी गई । यदि कुछ भ्रम भी फैलता तो हमारे सांसदो ने लगातार बोल बोलकर जनता को जागृत कर दिया । अन्ना दिन भर मे एक बार बोलते थे कि हम संसद को सर्वोच्च मानते है तो हमारे सांसद दिन भर मे दस बार बोलते थें कि यह संसदीय सर्वोच्चता को चुनौती है। खैर चाहे जनता भ्रष्टाचार के नाम पर जुटी हो या लोक सशक्तिकरण के नाम पर । जनता जुटी। सांसदो का मनोबल टूटा , राजनेताओ की चिन्ता बढी यही हम सबको संतोष है।

इस पूरे संघर्ष से मिला क्या ? राजनीतिज्ञ कोई साधारण जीव तो होता नही । क्या वह इतनी आसानी से हमे गुलामी से मुक्त कर देगा? क्या वह इतनी आसानी से अपनी मुठ्ठी मे बंद संविधान को आजाद कर देगा? अंग्रजो से मुक्ति के लिये तो हमे कितनी कुर्बानी देनी पडी जबकि वे तो भारत मे मुठी भर ही थे । इस भारतीय तंत्र की जडे तो बहुत गहराई तक है । इन सबसे मीडिया उपकृत है। ये साहित्यकारो कलाकारों को सम्मान और धन देकर उपकृत करते रहते है। इनकी मुठ्ठी मे एक संविधान बन्द है जिसके प्रति हर भारतीय के मन मे आज भी सम्मान है। वह संविधान इनके लिये ढाल का काम करता है । इसलिय संघर्ष उसकी अपेक्षा ज्यादा कठिन है जितना हम मानते है । दूसरी ओर यह भी सच है कि जब हम पहला वेरियर तोडने मे सफल रहे तो आगे इससे कम ही कठिनाई आयगी।

हम सब जानते है कि अभी तो जीत की शुरूआत भी नही हुई है। फिर यह पूरे भारत में विजय जुलुस कैसा? मेरे विचार मे यह जुलूस किसी हार जीत का प्रतीक न होकर लोक का मनोबल बढाने तथा तंत्र का मनोबल गिराने का वातावरण बनाने से आगे कुछ नही था। जिस तरह पूरे भारत मे खुशी का वातावरण था उसे देखकर तो ऐसा लगा जैसे कि हम वास्तव मे आजाद हो गये हो। अब विजय जुलूस को चौबीस घंटे बीत चुके है। सच्चाई यह है कि अब भी हम उसी जगह है जहॉ तेरह दिन पूर्व थे अतः राजनेताओं की ताकत को कम समझना उचित नहीं । हमे और अधिक सतर्कता से बढना होगा। अन्ना जी दूसरे कदम के रूप मे राइट टू रिकाल को उठा रहे है । हमे लगातार उनके दूसरे कदम के प्रति भी समर्थन व्यक्त करना होगा । यदि यह संघर्ष इस तरह तीन चार कदम बढा तो एक दिन ऐसा जरूर आयेगा जब हम छाती ठोक कर कह सकेंगे कि अब भारत का लोकतंत्र लोक नियुक्त से बदलकर लोक नियंत्रित हो गया है।

संसद की अवमानना का उपयोग या दुरूपयोग

जबसे अन्ना जी का आंदोलन शुरू हुआ है तबसे भारतीय संसद और उसके सांसद कुछ ज्यादा ही अपने अधिकारों के प्रति जागरूक हो गये है। स्थिति यहॉ तक आ गई है कि वे न केवल अपने सांसदो को अधिकारों के प्रति जागरूक कर रहें है बल्कि वे समाज मे भी एक भय बनाने की कोशिश कर रहे है कि आम लोग संसद और सांसदों से व्यवहार करने मे भयमुक्त न हो जावे। यही कारण है कि सांसदो ने तत्काल ही ओम पुरी, किरण बेदी, प्रशान्त भूषण आदि के विरूद्ध अवमानना के शस्त्र का प्रयोग किया।

ओमपुरी, किरण बेदी, प्रशान्त भूषण ने क्या कहा यह तो मै प्रत्यक्ष नहीं सुन सका किन्तु बाद में जो चर्चा मे आया उससे स्पष्ट था कि इन तीनो के विरूद्ध अवमानना के लिये बहाना खोजा जा सकता था। मैने जब बरेली के सांसद और ओमपुरी के बीच टी वी पर संवाद सुना तो मैने देखा कि बेचारे ओमपुरी बार बार माफी मांग रहे थे और सांसद जी उनपर लगातार बरस रहे थे। सांसद महोदय ने अपनी इमानदारी का इतना गुणगान किया कि मै आश्चर्य चकित हो गया। मै पूरी तरह आश्वस्त हूॅ कि भारतीय संसद का शायद ही कोई सांसद हो जो यह दावा कर सके कि उनने अपने चुनाव खर्चे का जो हिसाब सार्वजनिक रूप से दिया है उससे ज्यादा चुनाव मे खर्च नहीं किया है । यदि बरेली के सांसद महोदय ऐसा दावा करें तो हम इस संबंध मे उनकी इमानदारी की जॉच करके प्रमाणित करने को भी तैयार है।

मै मानता हूॅ कि ओमपुरी जी ने परिस्थितियों को ठीक से समझे बिना ही अनावश्यक बातें बोल दी । सच्चाई यह है कि गुलाम यदि अपने मालिक को चोर कह दे भले ही वह चोर हो तो भी ऐसी भाषा बोलना ठीक नहीं। स्वाभाविक है कि मालिक ऐसी भाषा सहन नही कर सकता। ओमपुरी जी ने अच्छा किया जो सच्चाई को समझा और माफी मांग ली।

भारतीय संसद सांसदो के अधिकारो के प्रति बहुत जागरूक है। मै अच्छी तरह जानता हूॅ कि भारतीय संसद पांच सौ तेतालीस निर्वाचित सांसदा से बनती है तथा उसमें प्रत्येक सांसद को स्वतंत्रता पूर्वक बोलने का विशेषाधिकार प्राप्त है। संविधान की धारा एक सौ पाच मे इसका स्पष्ट उल्लेख है। जब सांसद को सदन मे बोलने की पूर्ण स्वतंत्रता है तो कोई दल व्हिप जारी करके सांसद की स्वतंत्रता मे बाधा कैसे उत्पन्न कर सकता है? क्या यह विशेषाधिकार उल्लंघन नही है? संसद मे सांसद का चुनाव संवैधानिक प्रक्रिया है जबकि दलीय अनुशासन संवैधानिक प्रक्रिया का भाग नही है। दल का अनुशासन संवैधानिक स्वतंत्रता के उपर नहीं हो सकता। आज तक किसी सांसद ने इस विषय को संसद की अवमानना नही माना।

शरद यादव ने संसद मे जिस भाषा का उपयोग किया वह वाक् स्वतंत्रय है या अवमानना यह सांसदो को तय करना होगा । मेरा तो पूर्व में भी विचार रहा है और अब भी यही विचार है कि सांसदो को प्राप्त विशेष अधिकारो पर फिर से विचार करना चाहिये । विशेष रूप से इस बात पर अवश्य विचार करने की जरूरत है कि संसद की अवमानना पर न्यायालय विचार करे और न्यायालय की अवमानना पर संसद । यह उचित नही कि संसद ही अपन विशेषाधिकार भी तय कर ले और वही अवमानना भी मान ले और वही दण्डित भी करें। अब वह जमाना गया जब संसद और सांसद ही सब कुछ थे। अन्ना जी के आंदोलन ने प्रमाणित कर दिया है कि संसद और सांसद सब कुछ होते हुए भी समाज के समक्ष कुछ नही है।

(1) सुशासन की मौलिक समस्या का समाधान – भरत झुनझुन वाला

विषय है कि लोकपालकी नियुक्ति कौन करेगा? अन्ना हजारे की मांग है कि न्यायधीशों, नागरिको एवं संवैधानिक पदाधिकारियों द्वारा नियुक्ति की जाय। मेरी समझ मे नियुक्ति की इस प्रक्रिया से समाधान नही होता है । चयन समिति में इन व्यक्तियो मे से किसकी नियुक्ति होगी, यह कौन तय करेगा? अन्ततः यह कार्य सरकार को ही करना पडेगा।

सरकार चाहेगी तो चयन समिति मे भ्रष्ट व्यक्तियों की नियुक्ति कर सकेगी जैसे सीवीसी थामस के प्रकरण मे हुआ था । नागरिकों मे अनेक भ्रष्ट है। न्यायधीशों मे भी भ्रष्ट है। संवैधानिक पदाधिकारियों की नियुक्ति सरकार द्वारा की जाती है। यदि य भ्रष्ट न होते तो आज तक स्वतः भ्रष्टाचार नियंत्रित हो जाता। सच यह है कि देश के शीर्ष नेता स्वयं भ्रष्ट है। हवाला और बोफोर्स

प्रकरण मे इनके भ्रष्टाचार मे लिप्त होने के पर्याप्त संकेत उपलब्ध थे । परंन्तु संवैधानिक पदाधिकारियों के भ्रष्ट होने से नियुक्ति लगभग असंभव लगती है। चोर द्वारा कितनी भी पारदर्शी प्रक्रिया से लोकपाल की नियुक्ति की जाय, अन्ततः चोर ही नियुक्त किया जायगा । सही है कि सरकार द्वारा संतोष हेगडे एंव किरण बेदी जैसे किन्ही ईमानदार व्यक्तियों की नियुक्ति की गई है किन्तु इसे अपवाद ही मानना चाहिये । अपवादो के आधार पर व्यवस्था को बनाना उचित नही है।

सरकार से आशा करना कि वह व्यवस्था बनाएगी जिससे भ्रष्टाचार दूर हो पूर्णतया खयाली पुलाव है। हमें बाहर से सरकार पर नियंत्रण का रास्ता ढूंढना होगा । ऐसी व्यवस्था बनानी होगी कि सरकार की इच्छा के बावजूद उसे नियत्रण मे आना पडे जैसे घोडे पर लगाम लगाई जाती है । ऐसी व्यवस्था बनानी होगी । जिसपर सरकार का तनिक भी दखल न हो। यह व्यवस्था दो स्तर पर बनाई जा सकती है । पहला स्तर संसद का है और दूसरा स्तर विचारकों का है।

वर्तमान शासन व्यवस्था का स्वरूप वास्तव में पार्टी तंत्र का है । यह लोकतंत्र है ही नही, चूंकि चयनित सांसद पर पार्टी की व्हिप की तलवार लटकती रहती है । पुनः टिकट पाने के लिये भी सांसद को पार्टी के नेताओ के इशारे पर नाचना होता है। मित्र बताते है कि किसी ज्ञापन पर एक प्रमुख पार्टी के लगभग 20 सांसदो ने अपने स्वतंत्र विवेक से दस्तखत कर दिया था। इसपर पार्टी के शीर्ष नेताओ ने उन्हे फटकार लगाई । कहा कि किसी विषय पर मन्तव्य बनाने के पहले पार्टी के हाई कमान से स्वीकृति लेनी चाहिये । तात्पर्य यह है कि वर्तमान मे सांसदो की चाल पार्टी के शीर्ष नेताओं के हित साधने की दिशा मे होती है । जानकार बताते है कि प्रमुख पार्टियो के नेताओ मे अलिखित समझौता हो चुका है कि वे एक दूसरे के व्यक्तिगत भ्रष्टाचार एंव कालेधन पर आवाज नहीं उठाएंगे। दोनो प्रमुख पाटियों द्वारा अपने –अपने शासनकाल मे दूसरी पार्टी के कालेधन का मामला नहीं उठाया गया है। अतः सरकार द्वारा जो लोकपाल की पहल की जा रही है वह दिखावटी है। जैसे जेब कतरा मुसाफिर के सामान को उठवाने मे मदद करता है। और मौका मिलते ही हाथ साफकर देता है । दरअसल ऐसा रास्ता ढूंढना है जो पार्टी तंत्र की दखल से बाहर हो।

सुझाव है कि इमानदार लोग इंडिपेन्डेन्ट प्रत्याशी के रूप मे चुनाव लडें । लक्ष्य होना चाहिये कि ऐसे 100 सांसदो को जिता कर लाए । इन प्रत्याशियों का संकल्प होगा कि वे किसी भी पार्टी को समर्थन नही देंगे और हर विषय पर अपना स्वतंत्र मत डालेंगे। सरकार सदा अल्पमत मे रहेगी । किसी भी कानून को पारित कराने के लिये सत्तारूढ पार्टी को इन स्वतंत्र सांसदो मे से कुछ का समर्थन प्राप्त करना ही होगा। इन स्वतंत्र सांसदो द्वारा डाला गया मत जनता की आवाज के अनुरूप हो सकता है चूंकि ये पार्टी के अंकुश के बाहर होंगे। विशेष बात है कि यह व्यवस्था वर्तमान संवैधानिक ढांचे मे लागू हो सकती है अन्यथा हम 'न नौ मन तेल होगा, न राधा नाचेगी' के झंझट मे उलझ कर रह जाएगें। सरकार लोकपाल कानून नही बनाएगी। बिना कानून बनाए भ्रष्टाचार पर नियंत्रण होगा नही।

समस्या है कि पिछले 60 वर्षो मे इंडिपेंडेंट प्रत्याशिया की गति निराशागनक रही है। हमे इससे हतोत्साहित नही होना चाहिये चूंकि वर्तमान इंडिपेन्डेन्ट सांसद पार्टी के व्यक्तिगत समीकरण न बैठने के कारण इंडिपेंडेंट के रूप मे चुनाव लडते है । इनकी आईडियोलाजी मे विशेषता नही है । प्रस्तावित इंडिपेंडेंट प्रत्याशियों के समह को जनता को समझाना होगा कि हम सब मिलकर सरकार पर नियंत्रण करेंगें । अन्ना हजारे , बाबा रामदेव, किरण बेदी, को इंडिपेंडेंट रूप मे चुनाव लडने चाहिये।

दूसरे स्तर की व्यवस्था भी बनानी चाहिये । जरूरत है कि स्वतंत्र सत्यभाषी लोगों की मित्र मंडली बनाई जाय । समाज मे तमाम व्यक्ति है जो अपने सीमित क्षेत्र मे बिना किसी लाभ की आशा के दूसरो की मदद कर रहा है कोई भ्रष्टाचार के विरूद्ध लड रहा है , कोई जंगल बचाने के प्रयास कर रहा है तो कोई सच्चा शोध कर रहा है । जैसे एक कर्मचारी यूनिवर्सिटी मे व्याप्त भ्रष्टाचार के विरूद्ध हाई कोर्ट मे याचिका डालता है । दूसरा सामाजिक कार्यकर्ता जहॉ भी हाईड्रोपावर प्रोजेक्ट द्वारा जनता के अधिकारों का हनन होता है , वहॉ तत्काल पहुंच कर मदद करता है । तीसरा पुलिस का शीर्ष अधिकारी सरकारी सेवा से त्यागपत्र देकर शासन तंत्र के संबंध मे पुस्तिकाए लिखता है । वर्तमान मे ये सत्यभाषी व्यक्ति अपने को अकेला और असहाय महसूस करते है। इस तरह के तमाम लोग बिना फंडिग के, बिना किसी पद के, बिना किसी लाभ की आशा के कार्य कर रहे है। ये अपना समय और पैसा आत्मसंतुष्टि के लिये लगाते है। इनकी राजनीतिक महात्वाकांक्षा अथवा लोकेषणा भी नही होती है। ये लोग ही सच्चे मायने मे गांधी जी द्वारा बताए गये रचनात्मक कार्यकर्ता है । ऐसे स्वतंत्र,असंगठित , स्वप्रेरित , सत्यनिष्ठ एवं राष्ट्रभक्त लोगों का नेटवर्क बनाना चाहिये । जिस प्रकार कुम्भ मेले मे तमाम धर्मगुरू आते है और कमोबेश आपसी चर्चा करते है उसी तरह इन स्वतंत्र व्यक्तियो का कुम्भ मिलन आयोजित करना चाहिये । आपसी मेलजोल से सबकी उर्जा मे वृद्धि होगी । स्वतंत्र विचारको का यह समूह सच बोल सकता हैं। सभी पार्टियों के शीर्ष नेताओ ने विदेश मे कालाधन जमा कर रखा है । इस बात को ये निर्भीकता पूर्वक कह सकते है , चूंकि ये किसी भी प्रकार से शासन तंत्र पर निर्भर नही है। इस कुभं मेले मे उन व्यक्तियों को विशेष तौर से बुलाना चाहिये जो अंतर्मुखी है, जो किसी सामाजिक कार्य मे लगे हुए है तथा जो नौटकी नही करते है। इस नेटवर्क से समाज मे स्वतंत्र वैचारिक केन्द्रो की उर्जा बढेंगी , समाज को सुविचार मिलेंगे और सांसदो एंव पार्टियों पर दबाव बनेगा।

स्वतंत्र सांसदो एवं स्वतंत्र विचारको के माध्यम से ही भ्रष्ट पार्टी तंत्र पर अंकुश लगाना संभव होगा । लोकपाल का अंत मे वही हस्त्र होगा जो सीवीसी, न्यायाधीश आदि पदो का हुआ है। इस दिशा मे उर्जा नही लगानी चाहिये । कहना चाहूंगा कि अन्ना हजारे एवं बाबा रामदेव के आंदोलन का मै तहेदिल से समर्थन करता हूॅ । यह लेख इनकी आलोचना नही है, बल्कि इस आंदोलन पर मित्रवत चर्चा की ओर एक कदम है।

उत्तर– आपके विचार गंभीर है । हमलोगो ने भी जीवन भर लगभग इसी दिशा मे काम किया है । लोक संसद का प्रस्ताव भी हमलोगो ने अभी रखा है जो इसी अंक के उत्तरार्ध मे है। स्वतंत्र विचार मंथन का कार्य चल ही रहा है। आगे आपका इसी प्रकार मार्ग दर्शन मिलता रहेगा ऐसी आशा है।

(2) आचार्य पंकज, अध्यक्ष व्यवस्था परिवर्तन मंच, रिषिकेष उत्तराखंड

प्रश्न– ज्ञान तत्व दो सौ सताइस मे सत्यदेव गुप्त के पत्र के उत्तर मे आपने लिखा कि मुझे हिन्दू होने पर गर्व है। मेरे विचार मे आपको ऐसे संकीर्ण सोच से बचना चाहिये। प्रकृति की अनुपम कृति मनुष्य है हिन्दू मुसलमान यहूदी, इसाई और पारसी ये मनुष्य में भेदान्तर पैदा करके समाज को बुरी तरह से क्षतिग्रस्त किया है । जाति औ र धर्म को समाज तोडक मानने वाले भी वही करे जिसकी आलोचना करते थकते नही फिर तो हो चुका लोक स्वराज्य ? श्री युक्त बजरंग लाल अग्रवाल प्रगतिशीलता आई '' म बजरंग '' फिर बजरंग मुनि कही न कही जातिसूचक उपाधि से उपर उठने की भरपूर कोशिश । यही आपकी चेतना विचार एवं कर्म मे साम्यता प्रस्तुत करते हुए समर्थको को दृढ करती है। मुझे न तो आप हिन्दू दीखते है न तो आर्य समाजी न ही सनातनी। पूर्णरूपेण समाजी जो प्रतिक्षण समाज की चिन्ता मे सोता है जागता है । कई वर्षो तक छाया की तरह साथ रहकर जो जान सका हूॅ वही लिख रहा हूॅ। हिन्दू या मुसलमान होने मे मुझे शर्म है । मै मनुष्य हूॅ कृपया अपनी स्थिति स्पष्ट करे।

उत्तर– मैने जो कुछ लिखा है वह मेरी व्यक्तिगत धारणा है । म अपनी यह धारणा पूर्व मे भी कई बार व्यक्त कर चुका हूॅ कि मुझे हिन्दू होने पर गर्व है । मुझे ऐसा लगता है कि मेरी और आपकी सोच मे कोई फर्क नही है। मै उस हिन्दुत्व पर गर्व करता हूॅ जो गुण प्रधान है,कर्तव्य की प्रेरणा तक सीमित है, समाज को धर्म के नाम पर नही बांट कर व्यक्तियों साथ यथोचित व्यवहार करता है। आप उस हिन्दुत्व से घृणा करते है जो पहचान प्रधान है, अधिकारों के लिये जागरूक करने की चिन्ता मे सक्रिय है, समाज को किसी पहचान के आधार पर बने संगठन के आधार पर बांटता है। मेरे व्यक्तिगत विचार मे हिन्दुत्व मे धर्म के अधिकांश लक्षण मौजूद है जो वर्तमान मे अन्य तथा कथित धर्मो मे नही । अस्सी वर्षो से हिन्दुत्व का विकृत स्वरूप ''संघ परिवार'' के नाम से हिन्दुत्व को पहचान प्रधान, संगठन प्रधान, उपासना पद्धति प्रधान दिशा मे ले जाने के जी तोड परिश्रम के बाद भी यदि असफल हो रहा है तो मै हिन्दुत्व की मौलिक अवधारणा पर गर्व क्यो न करूॅ। क्या आज तक दुनिया मे कोई ऐसा भी संगठन है जिसने किसी अन्य संगठन के व्यक्ति को अपने साथ जुडने पर एक पक्षीय रोक लगा रखी हो? अन्य सभी तथा कथित धर्म संख्या विस्तार की छीना झपटी मे गले तक डूबे हुए है और हिन्दुत्व ने ऐसी छीना झपटी पर रोक लगा रखी है। मुझे तो इस व्यवस्था पर गर्व है। इस्लाम मे समाज व्यवस्था का अभाव है तो इसाइयत मे परिवार व्यवस्था का अभाव है। साम्यवाद मे दोनो का अभाव है। हिन्दुत्व मे परिवार व्यवस्था भी है और समाज व्यवस्था भी। इस्लाम और साम्यवाद व्यक्ति के प्राकृतिक अधिकारों की गारंटी नहीं देते किन्तु हिन्दुत्व देता है। जब तक कोई व्यक्ति किसी अन्य व्यक्ति के प्राकृतिक अधिकारो पर आक्रमण नही करता तब तक उसे समाज या परिवार से बहिष्कृत तक ही किया जा सकता है, दण्डित नही किया जा सकता। किसी अन्य धर्म मे ऐसी स्पष्ट व्यख्या नही है । हिन्दुत्व स्पष्ट रूप से अनुशासन और शासन की सीमाओं को समझता है । हिन्दुत्व धर्म, समाज और राज्य को एक साथ जोड कर नही देखता । अन्य धर्म देखते है। कई सौ वर्षो की इस्लामिक गुलामी तथा अंग्रेजी गुलामी क बाद भी तथा उक्त गुलामी काल से निपटने के लिये संघ परिवार द्वारा बनाई गई रणनीति का स्वतंत्रता के बाद दुरूपयोग करने के बाद भी हिन्दुत्व आज भी अपने मूल स्वरूप मे टिका है तो मुझे उसके इस स्वरूप पर गर्व है । मै चाहता हूॅ कि हिन्दुत्व अपने मूल स्वरूप को आधार बनाकर सशक्त बने न कि विकृत स्वरूप को ही हिन्दुत्व मानकर उससे घृणा करने की भूल करे।

(3) श्री जगदीश गांधी , सिटी मोन्टेसरी स्कूल लखनउ उत्तर प्रदेश

सुझाव– 66 वर्ष पूर्व 6 अगस्त 1945 को द्वितीय विश्व युद्ध के दौरान अमेरिका ने जापान के हिरोशिमा शहर पर लिटिल मैन नाम के यूरेनियम बम का विस्फोट किया था। हिरोशिमा मे गिरे बम के कारण 13 वर्ग किलोमीटर के क्षेत्र मे तबाही फैल गई थी । शहर की 60 प्रतिशत से अधिक इमारते नष्ट हो गई थी। एक अनुमान के अनुसार हिरोशिमा की कुल 3 लाख 50 हजार की आबादी मे से 1 लाख 40 हजार लोग इस बम विस्फोट मे मारे गये थे । इनमें सैनिक और वह लोग भी शामिल थे जो बाद मे परमाणु विकिरण की वजह से मारे गये । इसके पश्चात भी बहुत से लोग लंबी बीमारी कैंसर और अपंगता के भी शिकार हुए । इसके तीन दिनो बाद 9 अगस्त 1945 को अमेरिका ने जापान के नागासाकी नगर पर फैट मैन नाम का प्लूटोनियम बम गिराया था। अमरीका ने नागासाकी शहर पर पहले से भी बडा हमला किया , जिसमे लगभग 74 हजार लोग मारे गये थे और इतनी ही संख्या मे लोग घायल भी हुए थे। विश्व इतिहास मे यह आतंक और बर्बरता की पहली घटना थी। इस बर्बरता को कभी भी सही नही ठहराया जा सकता। प्रसिद्ध वैज्ञानिक आइन्सटीन से किसी ने पूछा कि तीसरा विश्व युद्ध किन किन शस्त्रो से लडा जायगा तो उन्होने कहा था कि तीसरे विश्व युद्ध के बारे मे तो मै नही बता सकता किन्तु मेरे अनुमान से चौथा विश्व युद्ध पत्थरो के द्वारा लडा जायगा । उनके अनुसार यदि तीसरा विश्व युद्ध हुआ तो संसार का पूरी तरह विनाश हो जायगा और तब युद्ध की अव्यवस्था मे मनुष्य को लडाई के लिये केवल पत्थर ही मिलेगा। उसके बाद उनसे पूछा गया कि क्या एटम बम के निर्माण से विश्व मे सुख शान्ति आ सकती है ? तब उस महान वैज्ञानिक ने कहा था कि जो एटम बम मैने बनाया है उससे तो भारी विनाश ही होगा । सुख शान्ति तो तभी आयेगी जब संसार मे सभी लोग सच्चे इंसान बन जायेंगे। अतः अब वह समय आ गया है जबकि विश्व के सभी वैज्ञानिकों को सच्चे मन से चिंतन व मनन करना चाहिये कि हम विज्ञान का उपयोग कैसे और किस तरह से करे , जिससे कि सारी मानवजाति का कल्याण हो । इसके लिये विश्व भर मे इस तरह के वैज्ञानिक समारोह होने चाहिये जिससे कि वैज्ञानिको की सोच मे बदलाव आये और वे संपूर्ण मानवता की भलाई के लिये कार्य करसके।

उत्तर '– अमेरिका ने हिरोशिमा नागासाकी पर बम गिराकर कई लाख लोागे की हत्या कर दी यह बम का दोष था , अमेरिका का दोष था जापान का दोष था या बम बनाने वाले वैज्ञानिकों का दोष था यह विवाद का विषय है। किन्तु यह निर्विवाद सत्य है कि मरने वालो का इस विवाद से कोई संबंध नही था। यदि कोई शत्रु मुझ पर लगातार आक्रमण कर रहा है, आक्रमण से सुरक्षा की मेरे पास शक्ति नही है, कोई सामाजिक व्यवस्था नही है जो मुझे न्याय दिला सके वैसी स्थिति मे मै सामाजिक मान्यताओ के विपरीत कदम उठाता हूॅ तो ऐसे कदम के पक्ष विपक्ष मे लम्बे समय तक चचा स्वाभाविक है।

इतनी बडी घटना के बाद भी हमने सीखा क्या ? दोष बम का नही है । दोष है ऐसी विश्व व्यवस्था के अभाव को जो उस समय भी नही थी और आज भी नहीं है । इस घटना के बाद इतने वर्ष बीत गये किन्तु हम कोई ऐसी विश्व व्यवस्था नही बना सके जो ऐस विध्वंसक हथियारो की आवश्यकता को ही अनावश्यक सिद्ध कर दे।

हम विश्व व्यवस्था और एटम बमो की बडी बडी बाते कर रहे है । हम अमेरिका तथा जापान के टकरावों की समीक्षा कर रहे है । किन्तु क्या नागासाकी हिरोशिमा की इस घटना के बाद भारत मे किसी ऐसी व्यवस्था का विकास हुआ है जो भारत के आंतरिक विवादो के समाधान में हिंसा की आवश्यकता को कम कर रही हो । नागासाकी हिरोशिमा की घटना के समय तो भारत गुलाम था किन्तु अब तिरसठ वर्षो से तो हम स्वतंत्र है। इसके बाद भी क्या कारण है कि आम नागरिको मे हिंसक हथियार रखने का आकर्षण बढ रहा है? दुनिया भर मे क्या हो रहा है उससे अधिक चिन्ता का विषय यह है कि हमारे भारत मे क्या हो रहा है? मेरी हमेशा से धारणा रही है और आज भी है कि हिंसा का संबंध व्यक्ति की भावनाओ के साथ साथ उसकी सामाजिक असुरक्षा के साथ भी जुडा है। जब कोई व्यक्ति यह देखता है कि वह अहिंसक रहने के कारण हार गया अथवा अन्याय करने वालो को कोई दण्ड आम तौर पर नही मिल रहा तब उसका विश्वास टूटता है । हमारे सारे अहिंसा के उपदेश उसे अव्यावहारिक दिखने लगते हैं। अच्छा हो कि हम अहिंसा और सुरक्षा पर विश्वास को मिलाकर मार्ग खोजे । आज हम पूरे भारत के कम से कम एक जिले के लोगो को यह विश्वास कराकर देखे कि वे पूरी तरह अहिंसक रहे क्योकि हमारी राज्य व्यवस्था गारंटी देती है कि हम किसी अन्य को उसके विरूद्ध हिंसा नहीं करने देंगे। यदि राज्य तथा हम सब मिलकर इतना भी कर सके तो शायद हमे यह सफलता भी मिल सकती है कि हम विश्व सरकार की योजना साकार कर सके।

(4) श्री बाल कृष्ण पिल्लै , तिरूअन्नतपुरम , केरल

प्रश्न– ज्ञान तत्व का अंक 225 पढा । पृष्ठ 18 पर आपने लिखा है कि हमारे देश की विधायिका ने मंत्रि मंडल के माध्यम से कार्यपालिका पर अपना अधिकार जमा रखा है मेरी समझ मे राष्ट्रपति प्रधानमंत्री और मंत्रिमंडल , कार्यपालिका के अंग है। इसे आप और स्पष्ट करे ।

2 पृष्ट बाइस पर आपने लिखा है कि पूंजीवाद की अपेक्षा समाजवाद अधिक घातक है जबकि हमलोग पूंजीवाद को ही अधिक घातक मानते है।

3 पृष्ठ 27 पर आपने लिखा है कि जर्मनी मे बिजली उत्पादन के लिये परमाणु उर्जा की जगह सौर उर्जा की तरफ बढा जा रहा है । आप बताइये कि भारत को सौर उर्जा की तरफ बढने मे क्या कठिनाई है?

उत्तर– स्वतंत्रता के बाद लम्बे समय तक न्यायपालिक तथा कार्यपालिका भी एक साथ रहे और विधायिका और कार्यपालिका भी । बाद मे न्यायपालिका तथा कार्यपालिका को तो अलग अलग किया गया। किन्तु विधायिका और कार्यपालिका आपस मे गड्डमड्ड ही रहे । मंत्रिमंडल को या तो विधायिका के साथ जुडना था या कार्यपालिका के साथ। किन्तु वह स्वयं को कहता तो रहा कार्य पालिका का अंग और बना रहा विधायिका का सर्वोपरि। कोई भी विधेयक पहले मंत्रिमंडल मे पारित होना आवश्यक है। यह कैसा पृथक्करण है। यही कारण है कि कानून बनाने वाली संसद की अपेक्षा मंत्रिमंडल अधिक शक्तिशाली होता चला गया । इस तरह मंत्रिमंडल न्यायपालिका से तो बाहर है किन्तु उसका पूरा दखल बिधायिका मे भी है और कार्यपालिका मे भी।

मैने लिखा है कि पूंजीवाद की अपेक्षा समाज वाद अधिक घातक है क्योकि समाजवाद राजनैतिक शक्ति तथा आर्थिक शक्ति को एक साथ सरकार के पास इकठ्ठा करता है जबकि पूंजीवाद राजनैतिक शक्ति को अलग और आर्थिक शक्ति को अलग अलग करता है। यदि धन कानून, और सेना एक जगह इकठ्ठे हो तो स्वाभाविक है कि खतरा अधिक होगां इसलिये मै समाजवाद को ज्यादा खतरनाक लिखता हूँ ।

भारत का विजली उत्पादन सौर उर्जा की दिशा मे नही बढा क्योकि भारत मे बिजली के मूल्य बढने ही नही दिये गये । यदि भारत मे कृत्रिम उर्जा का मूल्य दो गुना हो जाता तो भारत मे बडी मात्रा मे सौर उर्जा बनने लग गई होती । एक राजनैतिक षडयंत्र के अंतर्गत बिजली उत्पादन मे किसी न किसी नाम पर रोडे अटकाये गये जिससे डीजल पेट्रोल का आयात बढता रहे और भारत खाडी देशो से दबा रहे। बडे बांधो का भी विरोध हुआ और परमाणु उर्जा का भी । डीजल पेट्रोल की मूल्य वृद्धि का भी विरोध हुआ, किन्तु डीजल पेट्रोल का आयात कम करने की बात कभी नही उठी । ये तीनो ही कार्य लगातार एक ही गुट ने किया जिसकी खाडी दशों के साथ सहानुभूति जग जाहिर है। मेरा यह स्पष्ट मत है कि डीजल पेट्रोल पर विदेशी निर्भरता को कम करना हमारी सर्वोच्च प्राथमिकता होनी चाहिये तथा जो लोग खाडी देशों की वकालत के रूप मे डीजल पेट्रोल की खपत बढाने का वातावरण बनाते है ऐसे लोगों का पर्दाफाश किया जाना चाहिये।

(5) श्री चिन्मय व्यास , मालदेवता , देहरादून उत्तरांचल

प्रश्न–ज्ञान तत्व मे आपने अपनी भूमिका बताई थी कि अण्णा हजारे को आपका समर्थन है किन्तु रामदेव के आंदोलन को नही। और कारण बताया था कि उनसे सैद्धान्तिक मतभेद है वे वर्तमान लोकतंत्र के दायरे मे रहकर काम करना चाहते है और आप वर्तमान लोकतंत्र को बुनियादी तौर पर बदलने का काम मे लगे है।

यह सैद्धान्तिक आग्रहवाद, सर्व सेवा संघ ने भी अपनाया था और आपको समर्थन नही दिया था बल्कि एक तरह से आपकी खिलाफत ही की थी। ऐसा सैद्धान्तिक आग्रहवाद सर्वसेवा संघ के एक ग्रुप ने जे पी आंदोलन के समय भी अपनाया था जिससे सर्व सेवा संघ दो भागो मे बंटा ओर कमजोर हुआ। देश की ज्वलत समस्याओ का हल करने के लिये यदि कोई व्यक्ति या दल समूह पहल करता है तो उसे सिद्धान्तवादिता की आड से नकारना उचित नही लगता । अपनी सीमाओं मे रहकर वैचारिक समर्थन तो हम दे ही सकते है । रामदेव ने भ्रष्टाचार और कालेधन का मुद्दा उठाया था जो देश की ज्वलंत समस्या है (अन्य कई समस्याए भी है) वास्तविक लोकतंत्र ग्राम स्वराज्य अफसर शाही लाल फीता शाही नैतिक पतन आदि आदि । इन समस्याओ पर त्वरित ध्यान देने की जरूरत तो है ही। वैचारिक मतभेद होते हुए भी हमे समर्थन देना चाहिये। बुराई से लडने वाली ताकतों को एक जुट हो जाना चाहिये । यहॉ सिद्धान्त या आग्रह की ज्यादा जरूरत नही है।

वैचारिक लोगे मे आग्रह वाद एक बडी कमजोरी है । गांधी जी क प्रति पूरी पूरी श्रद्धा रखते हुए भी मुझे लगता है कि कभी कभी उन्होने भी ऐसा आग्रह रखा । कांग्रेस अध्यक्षता के लिये पट्टाभीसितारमैया को उन्होने अपना प्रत्याशी माना उनके खिलाफ सुभाष चंद्रबोस खडे हुए और जीत गयें। गांधी जी ने उसे अपनी हार माना। उनके आग्रहवाद के कारण फावर्ड व्लाक टूट कर अलग हुआ और सुभाष जैसे सुयोग्य व्यक्ति से कांग्रेस वंचित हो गई । इसी तरह उन्होने पटेल राजाजी और राजेन्द्र बाबू से ज्यादा महत्व जवाहर लाली जी को दिया । उनका यह आग्रह काफी तटस्थ विचारको को ठीक नही लगा। एक मकान के बाहर तख्ती लगी है कि अंदर आने की मनाही है । आने वालोपर कानूनी कार्यवाही की जायगी। उस मकान मे आग लग गई तो क्या हम आग बुझाने के लिये अंदर नही जावेंगे? आपत्ति काले नास्ति मर्यादा । ऐसे मे तर्क की जरूरत नही होती।

उत्तर– व्यक्ति की कई भूमिकाए हुआ करती है। समीक्षा, प्रशंसा , समर्थन, सहयोग, सहभागिता तथा दूसरी ओर समीक्षा , आलोचना , विरोध, संघर्ष । समय समय पर भूमिकाए बदलती भी रहती है । मै प्रारंभ से ही रामदेव जी का प्रशंसक हूँ। किन्तु मै प्रारंभ से ही चाहता था कि लोक और तंत्र के बीच अधिकारो का पुनर्निधारण हो। अन्ना जी का आंदोलन इस दिशा मे अन्य सभी प्रयत्नो की अपेक्षा अधिक ठीक लगा। इसलिये मैने इनके आंदोलन का समर्थन भी किया और सहयोग भी। फिर भी मैने अन्ना आंदोलन के साथ सहभागिता नही की क्योकि यह आंदोलन भी प्रारंभ मे भ्रष्टाचार विरोध तक सीमित था। मेरी हार्दिक इच्छा थी कि लोक और तंत्र के बीच सीधा ध्रुवीकरण हो। रामदेव जी का आंदोलन ऐसे स्पष्ट ध्रुवीकरण को कमजोर कर रहा था । मैने रामदेव जी के विषय मे कई लेख लिखकर उन्हे सलाह दी कि आप आंदोलन अन्ना का पूरा और खुला समर्थन करें। मुझ खुशी है कि बाबा रामदेव जी ने उससे भी बढकर इस आंदोलन का समर्थन किया जैसी मेरी अपेक्षा थी। रामदेव जी ने ठीक समय पर ठीक दिशा ली।

मै पहले भी मानता था और अब भी मानता हूँ कि भ्रष्टाचार या कालाधन स्वयं मे कोई समस्या न होकर समस्या के परिणाम है। राज्य अधिकार और धन का केन्द्रीयकरण करता है जिसके कारण भ्रष्टाचार और कालाधन पैदा होता है । आप अधिकार और संपत्ति के अकेन्द्रीयकरण की चर्चा न करके भ्रष्टाचार और कालाधन को मुद्दा बना रहे है। मै जानता हूँ कि इसका परिणाम नहीं निकलना है तो उसमे क्यो लगूँ । आपको ठीक लगता है तो करिये । मै साथ नही। फिर भी मैने आंदोलन रामदेव की कभी न आलोचना की है न विरोध बल्कि कभी कभी प्रशंसा ही की है।

गांधी जी ने कांग्रेस अध्यक्ष के चुनाव के समय जो निर्णय किया वह बिल्कुल ठीक था । उन्होने स्वतंत्रता के समय भी पटेल की तुलना मे नेहरू को चुना । मेरी समझ मे यह निर्णय ठीक था। सुभाष स्वतंत्रता के बाद आंशिक तानाशाही के समर्थक थे और पटेल सीमित मताधिकार के । नेहरू जी बालिग मताधिकार के पक्ष मे थे। मै आज भी केन्द्रीयकरण का विरोधी हूँ इसलिये सुभाष की अपेक्षा गांधी और पटेल की अपेक्षा नेहरू को पसंद करता हूँ। यदि उस समय नेहरू की अपेक्षा लोहिया और लोहिया की अपेक्षा जय प्रकाश आगे आते तो शायद कुछ अच्छा होता। पटेल सर्वश्रेष्ठ गृह मंत्री की योग्यता तो रखते थे किन्तु प्रधानमंत्री के मामले मे मेरी सोच कुछ अलग है।

उत्तरार्ध

निवेदन

प्रिय बंधु

हम आप लम्बे समय से ज्ञान यज्ञ परिवार के साथ जुडकर ज्ञान क्रान्ति अभियान बढाते रहे है। नौ अप्रेल को अन्ना जी के आंदोलन के समय स्वतंत्रता के बाद पहली बार सरकार जनशक्ति के समक्ष झुकी । यह एक ऐतिहासिक घटन थी जिसने तंत्र और लोक के बीच असंतुलन मे लोक को मजबूत करने की शुरूआत की । ज्ञान यज्ञ परिवार ने उस अवसर पर घाषित किया था कि हम उक्त ऐतिहासिक घटना की अर्ध वार्षिकी के अवसर पर नौ अक्टूबर को दीप प्रज्वलित करके घटना की याद करेंगें। हम नौ अक्टूबर तथा दस अक्टूबर को दो दिनो तक एक साथ बैठकर भविष्य की योजना तथा कार्यक्रमों की भी चर्चा करेंगे।

हम सात नवंबर से पचीस दिसम्बर तक भारत के सत्तर स्थानो पर बैठकें करके एक संपर्क यात्रा भी आयोजित करेंगे। इसकी रूप रेखा भी इस बैठक मे बनेगी।

हम सबने अब तक समाज मे लोक स्वराज्य की भूख पैदा की तथा जनमानस तैयार किया। उसी का परिणाम आज रामदेव जी अन्ना हजारे जी के आंदोलन के रूप मे दिखना शुरू हुआ हे। किन्तु अन्न जी का आंदोलन भी निर्णायक नहीं हो पायगा ।यह अवश्य है कि इस आंदोलन ने जनशक्ति का प्रभाव स्थापित कर दिया है। हम नौ अक्टूबर को एक नये प्रस्ताव की रूपरेखा पर भी विचार करेंगे। प्रस्ताव की प्रति साथ है।

उक्त सम्मेलन दिल्ली के पास नोएडा की अग्रवाल धर्मशाला मे आयोजित है। बैठक नौ अक्टूबर को नौ बजे प्रातः से शुरू होकर दस अक्टूबर पांच बजे शाम तक चलेगी। आप अपने साथियो सहित उक्त सम्मेलन मे अवश्य आइये । भोजन और निवास की व्यवस्था वहॉ के कार्यकर्ता करेंगे। आप उक्त सम्मेलन मे अवश्य आने की कृपा करें। अन्य साथियो को भी आने हेतु प्रेरित करें। आवश्यकतानुसार आप 9617079344 पर फोन कर सकते है।

प्रस्ताव

(1) वर्तमान लोकसभा के समकक्ष एक लोकसंसद हो। लोकसंसद की सदस्य संख्या, चुनाव प्रणाली तथा समय सीमा वर्तमान लोक सभा के समान हो । चुनाव भी लोकसभा के साथ हो किन्तु चुनाव दलीय आधार पर न होकर निर्दलीय आधार पर हो।

(2) लोक संसद के निम्न कार्य होगें

(क) लोकपाल समिति का चुनाव

(ख) संसद द्वारा प्रस्तावित संविधान संशोधन पर निर्णय

(ग) सांसद , सर्वोच्च न्यायालय के न्यायाधीश , मंत्री या राष्ट्रपति के वेतन भत्ते संबंधी प्रस्ताव पर विचार और निर्णय

(घ)किसी सांसद के विरूद्ध उसके निर्वाचन क्षेत्र के अंतर्गत सरपंचो के बहुमत से प्रस्तावित अविश्वास प्रस्ताव पर विचार और निर्णय

(च) लोकपाल समिति के भ्रष्टाचार के विरूद्ध शिकायत का निर्णय

(छ) व्यक्ति, परिवार ग्राम सभा, जिला सभा, प्रदेश, सरकार तथा केन्द्र सरकार के आपसी संबंधो पर विचार और निर्णय

(3)लोक सांसद को कोई वेतन भत्ता नही होगा। बैठक के समय भत्ता प्राप्त होगा।

(4) लोक संसद का कोई कार्यालय या स्टाफ नही होगा । लोकपाल समिति का कार्यालय तथा स्टाफ ही पर्याप्त रहेगा।

(5)यदि किसी प्रस्ताव पर लोकसंसद तथा लोक सभा के बीच अंतिम रूप से टकराव होता है तो उसका निर्णय जनमत संग्रह से होगा।

बजरंग मुनि कार्यालय सचिव
9617079344 9302811720 अभ्युदय द्विवेदी

यात्रा विवरण

दिनांक			संयोंजक			
8/11				दोपहरबाद	नोएडा –	घनश्यामजी
9/11	पूर्व	गाजियाबाद	अजय भाई	पश्चात	मेरठ –	ओमपाल जी
10/11	पूर्व	दौराला	ओमपाल जी	पश्चात	विजनौर –	डाक्टर प्रकाश
11/11	पूर्व	पुरैनी बाजार	धर्मवीर शास्त्री	पश्चात	नजीबाबाद–	डाक्टर प्रकाश
12/11	पूर्व	....		पश्चात	मुजप्फर नगर –	होतीलाल शर्मा
13/11	पूर्व	देहरादून	विजय शंकर शुक्ल	पश्चात	हरिद्वार	विजय शंकर शुक्ल
14/11	पूर्व	सहारनपुर	रतिराम जी प्रधान	पश्चात	अम्बाला–	अर्पित अनाम
15/11	कभी भी	शिमला	बलवंत यादव जी	पश्चात	....	
16/11	पूर्व	शेरपुर	संजय भाई	पश्चात	....	इशम सिंह जी
17/11	पूर्व	....	इशम सिंह जी	पश्चात	....	रणवीर शर्मा जी
18/11	पूर्व	....	अशोक गाडिया जी	पश्चात	....	गाडिया जी

19/11 पूर्व ..... गाडिया जी पश्चात ..... गाडिया जी
20/11 पूर्व जयपुर धुव सत्य अग्रवाल पश्चात .....
23/11 पूर्व पिलखुआ छवील सिंह सिसोदिया पश्चात बनबोई नरेन्द्र जी
24/11 पूर्व धनारी रिषिपाल जी पश्चात बरेली – राज नारायण जी
25/11 पूर्व बरेली राजनारायण जी पश्चात सहावर – इस्लाम अहमद फारूकी
26/11 पूर्व फतेहपुर राम भूषण सिंह जी पश्चात जहानाबाद – वंशलाल सचान
27/11 पूर्व बाराबंकी ओम प्रकाश प्रकाश पश्चात रूदौली कैलाश नारायण तिवारी
28/11 पूर्व गोंडा चित्रान्गद श्रीवास्तव पश्चात .....
29/11 पूर्व गोरखपुर ओंकार तिवारी जी पश्चात कप्तानगंज – उमाशंकर यादव
2/12 .....डालटंनगंज – नवल तुलस्यान
3/12 पूर्व बोकारो कृष्णलाल रूंगटा पश्चात धनबाद जय किशन जी
4/12 .....खगडिया श्री टी पी जालान
5/12 .....नालंदा आर्य जी
6/12 .....आरा आचार्य धर्मेद्र
7/12 पूर्व भोरे महेश भाई पश्चात देवरिया चंद्रिका जी
8/12 पूर्व बिल्थरा चंद्र प्रकाश राय पश्चात मउ कृष्णदेव जी उमा पति जी
9/12 पूर्व गाजीपुर रामचंद्र जी दुबे पश्चात वाराणसी अशोक त्रिपाठी जी
10/12 ..... .चोपन देवेन्द्र शास्त्री जी
11/12 पूर्व ओबरा नरेन्द्र नीरव जी .....
13/12 पूर्व रायपुर अजीम भाई पश्चात रायपुर – वर्मा जी
14/12 पूर्व भानुप्रतापपुर वैधराज आहुजा पश्चात भानुप्रताप पुर वैधराज आहुजा
15/12 पूर्व पश्चात दुर्ग डा0 कोठारी
16/12 पूर्व गोन्दिया मधुसूदन जी पश्चात वर्धा सदाविजय आर्य
18/12 पूर्व इंदौर जसवंत राय जी पश्चात इन्दौर राजेन्द्र तिवारी भारतीय
19/12 पूर्व उज्जैन ..... भोपाल अशोक राजवैध
20 /12 पूर्व सागर डा0 प्रभु पश्चात छतरपुर जे0पी0 गुप्ता
21/12 पूर्व रीवा दुर्गेश जी पश्चात मनगवां अभ्युदय जी
22/12 पूर्व सीधी श्रुतिवंतु जी पश्चात बुढार अभ्युदय जी
23/12 पूर्व अनूपपुर मुन्नी बाई पश्चात अनुपपुर सीताराम शर्मा
24/12 पूर्व जशपुर कृपाशंकर सिंह जी पश्चात सीतापुर खुशीराम जी
25/12 रामानुजगंज

नोट– पिछल अंक से सहावर और बरेली की तारीखो मे बदलाव हुआ है।

गीत

आज खड़ा सम्पूर्ण देश के आगे यहॉ सवाल है।
ज्ञान यज्ञ ऐसे में लेकर, निकला आज मशाल है।।
राजनीति में जहर घुला है, टूट रही हैं दीवारें।
मन्दिर उगल रहे हैं शोले, खंजर गढ़ती मीनारें।
कब्बे मोती के अधिकारी, चुगता रेल मराल है।
ज्ञान यज्ञ ऐसे में लेकर, ...।।
अपराधी कर रहे फैसला, टूट रहा कानून यहॉ।
देश भक्त के हाथों होता, मानवता का खून यहॉ।
गुण्डे उछल रहे हैं भाई, चोर यहां खुशहाल है।
ज्ञान यज्ञ ऐसे में लेकर, ...।।
खतरे में है आज शराफत, नेता दंगे करवाते।
मुल्ला पण्डित के झगड़े में लोगों के घर जल जाते।
षड़यन्त्रों से आज हिल रही, संसद की दीवार है।
ज्ञान यज्ञ ऐसे में लेकर, ...।।
शोषक भ्रष्टाचारी ही, इस युग में नाम कमाता है।
जो अबला का शील लूटता, वही राम बन जाता है।
तोड़ रहा है जन–जीवन को, चंदा पर हड़ताल है।
ज्ञान यज्ञ ऐसे में लेकर, ...।।
गुण्डे है हर ओर सुरक्षित, सज्जन आंसू पीते है।
आज वोट की राजनीति में यहां, मुरारी जाल हो।
ज्ञान यज्ञ ऐसे में लेकर, ...।।
ज्ञान यज्ञ, अपराध मुक्त, जीवन का सुन्दर सपना है।
जो मानवता को जीवन दे, राज धर्म वह अपना है।

ज्ञान यज्ञ इस अन्धकार में, अव्यस्था का काल है।
ज्ञान यज्ञ ऐसे में लेकर, ...।।